दोऊ मिल अग्यारहीं भई, सब सालें मिलाइयां बीच कही।
कलीम अल्ला रोसनी दसमी मिनें, अग्यारमीमें ऊग्या दिनें।। ८ ।।

ग्यारहवीं सदी में मलकी और हकी स्वरूप मिले तो ज्ञान की रोशनी फैली। इसी ग्यारहवीं सदी में मोमिनों का मिलना कहा है। श्री श्यामाजी महारानी का तारतम ज्ञान जाहिर हुआ और ग्यारहवीं सदी में कुलजम सरूप की वाणी आई।

रात में रोसनी सब जुदी भई, इब्राहीम साल्हे मिल फजर कही।
भी फजर कही रोसनी बादल, बरस्या नूर रूहअल्लासों मिल।। ९ ।।

सौ वर्ष की रात्रि में जगह-जगह पर वाणी उतरी। श्री देवचन्द्रजी तथा श्री श्यामाजी के दूसरे तन श्री प्राणनाथजी दोनों स्वरूपों ने मिलकर कुलजम सरूप की वाणी दी। फजर के समय रूह अल्लाह श्री श्यामाजी को बादल कहा। इलम के जाहिर होने को ही कुरान में फजर कहा है। श्री प्राणनाथजी महाराज हकी स्वरूप के अन्दर श्री श्यामाजी महारानी के मिलने से कुलजम सरूप की वाणी की बरसात हुई।

बरस्या बादल नूर रोसन, गिरे आंझू सरमिंदे सबन।
सब रोवें होवें पसेमान, एही हाल होसी सारी जहान।। १० ।।

श्री प्राणनाथजी के मुखारबिन्द से परमधाम की वाणी जाहिर हुई। सब झूठ की पूजा करने वाले शर्मिंदे हुए। अपनी अज्ञानता पर रोकर पश्चाताप करेंगे। सारी दुनियां का यही हाल होगा।

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ ४४३ ॥

साखी– **तीन दिन कहे जो बुजरक, सो तीनों सूरतों के दिन।**
रसूल से कयामत लगे, ए जो किए रोसन।। १ ।।

कुरान के तीन दिन बड़े बताए हैं। बड़ी महिमा कही है। यह तीन दिनों में तीनों सूरतों की हकीकत बसरी, मलकी और हकी कही है। रसूल साहब कुरान लाए। रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी तारतम लाए। हकी सूरत कुलजम सरूप की वाणी लाए। इस तरह से रसूल साहब से कयामत तक की हकीकत लिखी है।

याद करो खुदाए के तांईं, तकबीर कहों दिन गिने हैं जांहीं।
ए तीन दिन जो हैं बुजरक, पीछे ईद जुहा के हक।। २ ।।

कहा है कि कुरान में कयामत के दिन जाहिर होने का लिखा है, इसलिए हरदम खुदा के स्वरूप को याद करो। इन तीनों दिनों की बड़ी महिमा कही है। इनके पीछे बारहवीं सदी में श्री राजजी महाराज के स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज खुद खुदा जाहिर हुए।

नजीक इमाम आजम के कही, पीछे निमाज सुबह की भई।
अरफा से असर ईद दिन, दोए साहेब भए कौल इन।। ३ ।।

आजम नाम के इमाम ने अपनी किताब में लिखा है कि बारहवीं सदी में फजर की नमाज पढ़ी जाएगी। अरफा अर्थात् दसवीं सदी से लेकर बारहवीं सदी (फजर) तक के बीच रूह अल्लाह श्री श्यामाजी और इमाम मेंहेंदी दो साहेब हाजिर हुए।

Nijanand App

सुबह सेती अरफे का दिन, आखिर तांईं असर इन।
बांधी उमेद बड़ी आगूं आवन, भई तीनों दिन निमाज पूरन।।४।।

दसवीं से बारहवीं सदी तक इन्हीं दोनों स्वरूपों मलकी और हकी सूरतों का अमल रहा। पहले जमाने से भक्तों ने इन दोनों स्वरूपों के आने की चाहना मांग रखी थी। अब आकर सबकी चाहना पूरी कर रहे हैं। अब तीनों स्वरूप बसरी, मलकी, हकी एकतन श्री प्राणनाथजी के अन्दर हो रहे हैं। इन तीनों के जमाने में जिन्होंने इमाम मेंहेंदी के समय 'मनुष्य तन मिले' की चाहना की थी। अब प्राणनाथजी के तन में तीनों मिलकर इमाम मेंहेंदी के तन में आए हैं और सबको मनचाहे सुख मिल रहे हैं।

इन मसलें साफई इमाम, माफक दूजे साहेब का नाम।
सिताबी फिरे जो कोई, तो रोज मिलावा लेवे सोई।।५।।

साफई इमाम ने अपनी किताब में साफ लिखा है कि रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी महारानी) जब दूसरा तन धारण करेंगी। तभी वह कयामत जाहिर करने वाले खुदा के दूसरे रूप होंगे। यदि अब भी कोई संशय करता है कि कयामत जल्दी क्यों नहीं होती, तो कयामत के दिनों की गिनती का जोड़ लगाकर देख ले।

अग्यारहीं बारहीं जिल्हज करे, सो गुनाह कछू ना धरे।
बाजे हैं जाहिल आरब, बातें करें सिताबी तब।।६।।

ग्यारहवीं और बारहवीं सदी में जिसने श्री प्राणनाथजी के स्वरूप को पहचानकर कुर्बानी की, उसको किसी तरह का गुनाह नहीं होगा। कुछ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि कयामत क्यों नहीं आ रही है?

गिरोह एक बखत आखिर, आबिद को खुदाए कह्या यों कर।
सिताबी होवे रुखसद, तुझ पर गुनाह नाहीं कद।।७।।

आखिरी कयामत के समय में मोमिन ही संसार को त्यागेंगे। जो श्री राजजी की अंगनाएं होंगी वह जल्दी ही दुनियां की मोह माया से छुटकारा पा जाएंगी और उनको किसी तरह से कष्ट नहीं होगा।

और कोई ढील करे जो तांहीं, तीन रात रहे मजल माहीं।
तिनको कछुए नहीं आजार, तेहेकीक योंही है निरधार।।८।।

ग्यारहवीं सदी में जो मोमिन जाग नहीं सके और माया में फंसे रहे, लेकिन बृज, रास, जागनी में श्री राजजी के साथ रहे, उनको किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा। यह निश्चित है।

इनमें जो कोई परहेज करे, पीछे अदा के हज गुनाह से डरे।
जो कोई खतरों से फिर्त्या होए, परहेज करे आराम वास्ते सोए।।९।।

इनमें जो परहेज करने वाली ईश्वरीसृष्टि हैं और ग्यारहवीं सदी कयामत ज़ाहिर होने के बाद भी गुनाहों से डरता रहे और ईमान गिराने वालों से बचता रहे, उनको भी अखण्ड सुख मिलेगा।

बाकी जेती रही उमर, तिनमें रखे खुदाए का डर।
कयामत को होवें जाहेर, पोहोंचेंगे बदले यों कर।।१०।।

अब इस शरीर में जितनी आयु बची है उतने दिन खुदा से डरो। कयामत के दिन यह सब बातें जाहिर हो जाएंगी। उसका उसी अनुसार फल मिलेगा।

॥ प्रकरण ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ ४५३ ॥

Nijanand App